अष्टावक्र जी के उपदेश का सार (Essence)

("अष्टावक्र गीता", व्याख्याकार स्वामी प्रखर प्रज्ञानंद, विद्या विहार नई दिल्ली, पर आधारित)

1. **आत्मा और परमात्मा एक ही तत्त्व हैं।**
2. **इस तत्त्व को पाना नहीं है, प्रत्युत वह तो प्राप्त ही है, क्योंकि वह तो हमारे अंदर ही है। केवल अज्ञान के कारण विस्मृत हो गया है। उसे ज्ञान द्वारा पुनः स्मृति में लाना है।**
3. यह तत्त्व-ज्ञान बुद्धि का विषय नहीं है। बुद्धि सीमित है, वह उस असीम को अपने में नहीं समा सकती।
4. इस तत्त्व-ज्ञान का उपदेश सुनकर कोई अपने को आत्म-ज्ञानी मान ले, तो यह उसका पाखंड मात्र होगा।
5. आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए आवश्यक है –
   (क) मुमुक्षु (वह जो ज्ञान प्राप्ति के लिए लालायित है) होना,
   (ख) स्वयं में पात्रता विकसित करना, और
   (ग) सदगुरु की शरण में जाना।
6. मुक्ति की प्राप्ति के लिए लिए आवश्यक है –
   (क) विषयों को विष के समान छोड़ना, तथा
   (ख) अपने अंदर क्षमा, सरलता, दया, संतोष और सत्य को धारण करना।
7. ध्यान, योग, उपासना आदि आंतरिक स्वच्छता के लिए हैं, पात्रता विकसित करने के लिए हैं। शरीर में उस परम शक्ति को समा लेने की तैयारी मात्र हैं।
8. पात्रता के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं –
   (क) अहंकार से मुक्ति,
   (ख) पूर्ण समर्पण,
   (ग) शरीर एवं मन के भावों से मुक्ति,
   (घ) शास्त्र व ज्ञान से मुक्ति, और
   (च) बाह्य उपादानों (factors) से अपने को मुक्त रखना।